SEMESTER - 3

CC- 11

South Asia 1950 Onwards

- **इंडियन डायस्पोरा , पार्ट-1**

Vetted by :

प्रो० (डॉ०) सुरेंद्रकुमार

विभागाध्यक्ष, इतिहासविभाग

पटनाविश्वविद्यालय, पटना

संपर्क : 09835463960

Presented by:

शिप्रानंदन

अतिथिशिक्षक, इतिहासविभाग

पटनाविश्वविद्यालय, पटना

संपर्क :08604171178

nandan.shiprabhu@gmail.com

इंडियन डायस्पोरा (पार्ट-1)

प्राचीन काल से ही मनुष्य अपनी जीविका एवं आवास के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करता रहा है और यह प्रवासन सिर्फ शारीरिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी होता है। प्रवासन एक भौतिक संकल्पना है,जिसके अंतर्गत मानव समूह का भौतिक प्रवासन होता है किन्तु डायस्पोरा एक अमूर्त संकल्पना है,जिसके अंतर्गत सामाजिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक संकल्पना को प्रमुखता दी जाती है। डायस्पोरा शब्द का प्रथम बार प्रयोग यहूदियों के ५८६ बी सी.से बेबीलोनिया से बाहर जाने के परिप्रेक्ष्य में हुआ। ये सम्पूर्ण पलिस्तीन के बाहर फ़ैल गया और यह डायस्पोरा का नकारात्मक पक्ष है। डायस्पोरा का सकारात्मक पक्ष भी है,जिसका अर्थ है to sow wide अर्थात " अच्छाई के बीज को दूर दूर तक बोना "।

डायस्पोरा को सकारात्मक रूप से उनलोगों के लिए प्रयुक्त किया गया है जो प्राचीन काल में यूनान से उपनिवेशीकरण के दौरान प्रवास किये गए तथा यहूदी,फिलिस्तानी,अफ्रीकन और आर्मेनियन के सन्दर्भ में नकारात्मक रूप से प्रयुक्त किया जाता है,जो परिस्थितिवश अपने गृह देश को छोड़कर अन्य देशों में प्रवासन के लिए मजबूर हुए। डायस्पोरा मात्र भौतिक रूप से मानवीय प्रवासन नहीं होता है बल्कि

इसके अंतर्गत विभिन्न वर्गों की परिभाषित सामाजिक पहचान,धार्मिक विश्वास एवं यद्दपि परिवार,नातेदारी एवं खाद्य पद्धति को संचालित करने वाले नियम,मूल्य एवं भाषा आते हैं। प्रवासन में व्यक्ति स्वयं को पूर्णरूप से मातृभूमि से जुड़ा नहीं कर पाते हैं बल्कि वे भौतिक रूप एवं मानसिक रूप से स्वयं को अपनी मातृभूमि से सम्बन्ध रखते हैं।अपनी मातृदेश के प्रति वफादारी की भावनात्मक लगाव को देखते हुए मेजबान देश के नागरिक प्रवासियों को संदेह की दृष्टि से भी देखते हैं तथा कहीं-कहीं तो स्थानीय लोग विद्रोह भी करते हैं लेकिन जैसे ही डायस्पोरा समुदाय के लोग मेजबान देश की संस्कृति एवं सभ्यता का पूर्णतया चोंगा पहन लेते हैं तो नागरिकों के बीच आपसी द्वेष अपेक्षाकृत कम हो जाता है।

इंडियन डायस्पोरा में हम प्रमुख रूप से उन प्रवासी भारतीयों के बारें में अध्ययन करते हैं जो समुद्र पार करके विश्व के अन्य देशों में बस गए हैं। प्रवास प्राचीन कील से निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समयानुसार एवं परिस्थितियोंवश इसके कारणों में इनमे अंतर रहा है। जैसे -प्रागैतिहासिक काल में मध्य एशिया के बर्फीले क्षेत्रों से मैदानी इलाकों में जाने के लिए प्रवास हुआ। इसी प्रकार प्राचीन काल में व्यापार एवं धर्म का विस्तारीकरण प्रवास का प्रमुख कारण था -बौद्ध एवं जैन धर्म। मध्यकाल में धार्मिक कटटरता एवं धन लोलुपता मुस्लिम आक्रमणकारियों के प्रवास का कारण था। ब्रिटिश या आधुनिक काल में प्रवास मुख्यतः जबरन या मजबूरीवश मजदूरों या सैनिकों द्वारा हुआ। ब्रिटिश काल में करीब दो मिलियन भारतीय

सैनिक विभिन्न युद्धों के परिणामस्वरूप अपनी भूमि को छोड़कर अन्य स्थानों में गए। ब्रिटिश शासकों द्वारा भारतीय मजदूरों (गिरमिटिया) को गुयाना,त्रिनिदाद,मॉरीशस,सूरीनाम,मलेशिया,साउथ अफ्रीका आदि स्थानों पर चाय और गन्ने की खेती के लिए भेजा गया। भारतीय मजदूरों ने अपने हुनर एवं कुशलता से धीरे-धीरे ही सही एक सम्मानीय स्थान प्राप्त कर लिया है। भारतीय मजदूरों ने विश्व युद्ध के पश्चात् यूरोप को पुनः बसने में बहुत सहयोग किया। २०वी शताब्दी के अंत से लेकर वर्त्तमान में २१ वी शताब्दी तक भारतीयों का प्रवास अनेक विभाग के कारण हो रहा है। वर्त्तमान समय में भारतीय अपनी मर्जी से विदेशों में बस रहे हैं।

आज अधिकतर विदेशी कंपनियों में भारतीय अच्छी संख्या में कार्य कर रहे हैं। इन लोगों ने अपनी अलग अलग पहचान एवं संगठन का निर्माण किया है। जैसे साउथ एसियन हांगकांग मुस्लिम,कैनेडियन,सिख,पंजाबी मैक्सिकन आदि। ये अप्रवासी भारतीय आज भी अपने प्राचीन धर्म,संस्कृति,मान्यताओं,पहनावा,त्यौहार एवं भारतीय सिनेमा के द्वारा अपनी मातृभूमि से जुड़े हुए हैं। इनकी इन्ही भारतीय पहचान के कारण इन्हे विदेशों में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरण-आर्थिक मंदी के समय न्यू जर्सी में युवकों का एक समूह भारतीय महिलाओं को सिंदूर एवं बिंदी से पहचानकर उन पर हमला करता है। इसी प्रकार कैलिफ़ोर्निया में सिखों को पगड़ी पहनने के कारण सड़क पर अपराधी माना जाता है।इतनी समस्याओं के वावजूद भारतीय प्रवासी विदेशों में अपने

राजनीतिक,सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों के प्रति सजग है। वर्त्तमान समय में समृद्ध प्रवासी भारतीय पुनः अपनी मातृभूमि वापस आ रहे हैं,कुछ यहाँ बस रहे हैं तो कुछ अपना धन भारतीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में लगा रहे हैं। वर्त्तमान में भारतीय डायस्पोरा हर क्षेत्र में नै उचाईयों को छू रहा है।